नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अदृश्य श्रम को मिला सम्मान

सुप्रीम कोर्ट का हालिया फैसला भारतीय समाज में गृहिणियों की भूमिका को लेकर एक ऐतिहासिक और दूरगामी महत्व का निर्णय है. जस्टिस संजय करोल की अध्यक्षता वाली पीठ ने गृहिणियों के घरेलू श्रम को आर्थिक मान्यता देते हुए उसे 30 हजार रुपये प्रतिमाह के मूल्य के बराबर माना है. साथ ही गृहिणियों को 'नेशन बिल्डर' अर्थात राष्ट्र निर्माता की संज्ञा देकर न्यायपालिका ने उस सत्य को स्वीकार किया है, जिसे समाज लंबे समय से जानता तो था, लेकिन औपचारिक मान्यता देने से बचता रहा.

भारतीय परिवार व्यवस्था की सबसे मजबूत कड़ी गृहिणी होती है. वह घर के प्रबंधन से लेकर बच्चों के पालन-पोषण, बुजुर्गों की देखभाल, भोजन व्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा और भावनात्मक संतुलन तक अनेक जिम्मेदारियां निभाती है. यह कार्य किसी निश्चित समय सीमा में नहीं बंधा होता, बल्कि 24 घंटे और वर्ष के 365 दिन चलता है. इसके बावजूद इस श्रम को अक्सर 'काम' नहीं माना जाता, क्योंकि इसके बदले कोई प्रत्यक्ष वेतन नहीं मिलता. यही कारण है कि राष्ट्रीय आय और आर्थिक विकास के पारंपरिक आंकड़ों में करोड़ों महिलाओं का योगदान अदृश्य बना रहता है.

सुप्रीम कोर्ट ने मोटर दुर्घटना मुआवजा मामलों के संदर्भ में यह स्पष्ट किया है कि यदि किसी दुर्घटना में गृहिणी की मृत्यु हो जाती है या वह गंभीर रूप से घायल हो जाती है, तो उसके घरेलू श्रम के नुकसान की भरपाई भी मुआवजे का हिस्सा होनी चाहिए. यह केवल कानूनी व्यवस्था में सुधार नहीं है, बल्कि सामाजिक सोच में परिवर्तन का संकेत भी है. अदालत ने माना है कि गृहिणी का श्रम परिवार के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना किसी वेतनभोगी व्यक्ति का रोजगार.

वास्तव में यह फैसला महिलाओं की गरिमा और सम्मान को नई ऊंचाई देता है. लंबे समय से महिला संगठनों, सामाजिक चिंतकों और अर्थशास्त्रियों द्वारा यह मांग उठाई जाती रही है कि घरेलू कार्यों को आर्थिक मूल्यांकन के दायरे में लाया जाए. संयुक्त राष्ट्र और कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी समय-समय पर इस बात पर जोर देती रही हैं कि घरेलू और देखभाल संबंधी कार्यों का योगदान किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है. भारत की सर्वोच्च अदालत ने अब इस विचार को न्यायिक स्वीकृति प्रदान कर दी है.

हालांकि यह भी ध्यान रखना होगा कि गृहिणी के श्रम का वास्तविक मूल्य केवल 30 हजार रुपये प्रतिमाह तक सीमित नहीं है. परिवार की स्थिरता, बच्चों के संस्कार, सामाजिक समरसता और मानव संसाधन निर्माण में उनकी भूमिका का पूर्ण आर्थिक आकलन संभव नहीं है. फिर भी न्यायालय द्वारा निर्धारित यह मानक एक महत्वपूर्ण शुरुआत है, जो भविष्य में व्यापक नीतिगत विमर्श का आधार बन सकता है.

यह फैसला सरकारों, नीति निर्माताओं और समाज के लिए भी एक संदेश है कि महिलाओं के घरेलू श्रम को केवल पारिवारिक दायित्व मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. यदि राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले हर व्यक्ति को सम्मान मिलना चाहिए, तो गृहिणियों को भी उसका उचित स्थान मिलना ही चाहिए.

सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय केवल मुआवजा निर्धारण का कानूनी आदेश नहीं है, बल्कि भारतीय समाज के उस मौन सत्य की स्वीकारोक्ति है कि घर की चारदीवारी के भीतर होने वाला श्रम भी राष्ट्र की प्रगति की नींव है. यह फैसला महिलाओं के अदृश्य योगदान को दृश्य बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, जिसका स्वागत किया जाना चाहिए.

भारत के प्रधानमंत्रियों के नेतृत्व के दो अलग-अलग युगों का प्रतिनिधित्व

नरेन्द्र मोदी का युग

सुहेल सेठ

नरेन्द्र मोदी अनजाने में ही रॉबर्ट फ्रॉस्ट के इस कथनपर भरोसा करते नजर आते हैं कि- उन्होंने कम इस्तेमाल होने वाला रास्ता चुना और शायद इसी से सारा फर्क पड़ा. जवाहरलाल नेहरू और नरेन्द्र मोदी के रूप में भारत के प्रधानमंत्रियों के नेतृत्व के दो अलग-अलग युगों का प्रतिनिधित्व होता है. इनमें से प्रत्येक युग को उनकी सीमाओं, पसंदगियों और महत्वाकांक्षाओं के आधार पर परिभाषित किया जाता है. नेहरू ने जहां एक नाजुक एवंनवगठित संप्रभु राष्ट्र की अगुवाई की, वहींमोदी ने वैश्विक झटकों से जूझते हुए एक विशाल, डिजिटल रूप से जुड़े एवं अति-प्रतिस्पर्धी लोकतंत्र के शासन को संभाला है. दोनों नेताओं की नेतृत्व शैली में अंतर इस तथ्य को दर्शाता है कि भारत की शासन संबंधी जरूरतें किस कदर बढ़ी हैं - और क्यों मोदी का कार्यकाल राज्य की क्षमता, समावेशन, बुनियादी ढांचे, कूटनीति और कार्यान्वयन की दृष्टि से कहीं अधिक प्रभावशाली रहा है. नेहरू का शासन संबंधी दर्शन ऊपर से नीचे की ओर संस्थाओं के निर्माण और राज्य-निर्देशित अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित था.विभाजन की विभीषिका के बाद खुद को सहेजकर फिर सेएकजुट होने वाले एक राष्ट्र की दृष्टि से यह तरीका सही था. फिर भी, इस तरीके ने एक ऐसे केन्द्रीकृत नियंत्रण को भी स्थापित किया जिसने अक्सर नागरिकों को भागीदार के बजाय प्राप्तकर्ता के रूप में रखा.

मोदी का दृष्टिकोण उस तरीके को उलट देता है और शासन को गरिमा एवंकार्यान्वयन द्वारा संचालित एक जन आंदोलन -सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास - के रूप में स्थापित करता है. बैंक खातों, डीबीटी, किफायती गैस कनेक्शन, आवास, शौचालय, तेज गति से सड़क निर्माण और डिजिटल कल्याणकारी योजनाओं जैसी नीचे से ऊपर की ओर जाने वाली यह लामबंदीराज्य से मिलने वाले फायदों को परिवार के स्तर पर दृश्यमान बनाती है, जिससे परिणामों के साथ-साथ भरोसा भी बढ़ता है. आकार ही दोनों नेताओं के कार्यकालों के बीच का मुख्य अंतर है. नेहरू ने जिस समय पदभार संभाला तब भारत की आबादी लगभग 34 करोड़ और दलीय प्रतिस्पर्धा नगण्य थी.मोदी के सत्ता संभालने के वक्त देश की आबादी 131 करोड़ से अधिक और एक ऐसी दलीय प्रणाली सामने थी जिसमें हजारों पंजीकृत संस्थाओं का अस्तित्व था और आम चुनाव के मतपत्रों में सैकड़ों संस्थाओं की मौजूदगी थी.भारत के पहले आम चुनाव में लगभग 17 करोड़ मतदाताओं ने मतदान किया था. जबकि,2014 में मतदाताओं की तादाद 83 करोड़ से अधिक हो गई थी तथा 2024 तक इसमें और भी बढ़ोतरी हुई. मोदी को बार-बार राष्ट्रीय जनादेश इस तीखे विखराव और चौबीसों घंटे सातों दिन डिजिटल निगरानी के बावजूद हासिल हुए हैं.पल-पल की डिजिटल निगरानी वाला मीडिया का यह माहौल नेहरू काल कीसंस्था-आधारित व प्रिंट-युग की राजनीति से बिल्कुल ही अलग है.

> नेहरू की विरासत आधारभूत है-संप्रभुता, संसदीय संस्कृति, वैज्ञानिक सोच और संस्थागत आधार. मोदी की खासियत इसके व्यापक कार्यान्वयन में है-आधारभूत संरचनाओं को ऐसी प्रणालियों में परिवर्तित करना जो रोजाना करोड़ों लोगों तक वास्तविक समय में, मापने योग्य परिणामों के साथ पहुंचे और साथ ही भारत को नियम-निर्धारक शक्ति के रूप में फिर से स्थापित करना. अलग-अलग दौर में अलग-अलग तरह के नेतृत्व की जरूरत होती है. पहले युग ने ढांचा तैयार किया औरदूसरे युग ने उसके कल-पुर्जों को ठोस बनाया, रास्तों का विस्तार किया, तारों को डिजिटल बनाया और दुनिया के लिए रोशनी की व्यवस्था की. समावेशिता, कार्यान्वयन, बुनियादी ढांचा और प्रभाव के मानकों पर, मोदी एक घोर जटिल युग के एक बेहद प्रभावशाली प्रधानमंत्री और वैश्विक राजनेता साबित हुए हैं. यही कारण है कि मोदी के नेतृत्व का युग उनके कार्यकाल समाप्त होने- यानी जब भी वे पद छोड़ेंगे - के बाद भी लंबे समय तक जारी रहेगा. लाखों भारतीयों के लिए, नरेन्द्र मोदी वह प्रेरक शक्ति साबित हुए हैं जिसकी भारत को सख्त जरूरत है.

निरंतर ऑनलाइन आलोचनाओं के बीच शासन चलाने से जवाबदेही और कथनात्मक प्रतिस्पर्धा की गति तेज हो जाती है.तीन लोकसभा चुनावों के दौरान मोदी का चुनावी रूप से केन्द्र में बने रहना - और कई परिवारों के तीन पीढ़ियों के जेहन मेंप्रासंगिक बने रहना - नेटवर्क के इस युग में उनकी असाधारण राजनीतिक स्थिरता को दर्शाता है. आर्थिक दृष्टि से, नेहरू के मॉडल ने आधारभूत उद्योगों और वैज्ञानिक संस्थानों को तराशा, लेकिन आखिरकार यह 3 - 4 प्रतिशत के आसपास की हिंदू विकास दर के रूप में जानी जाने वाली दर पर स्थिर हो गया.मोदी की अगुवाई वाला भारत वैश्विक विकास के इंजन के रूप में काम कर रहा हैऔर कोविड-19, मुद्रास्फीति में उछाल, आपूर्ति श्रृंखला में झटके तथा भू-राजनैतिक संघर्ष से ग्रस्त एक दशक के दौरान इसकी औसत वृद्धि दर लगभग 6.5-7 प्रतिशत की रही है.

(लेखक एक भारतीय व्यवसायी और स्तंभकार हैं.

नए भारत की नई शिक्षा व्यवस्था

विकसित राष्ट्र के लक्ष्य का मजबूत आधार

प्रोफेसर मनोज कुमार
डायरेक्टर, आईआईएम मुंबई

ये करीब दो सदी पुरानी बात है जब ब्रिटिश इतिहासकार और प्रशासक थॉमस बैबिंगटन मैकाले ने एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की नींव रखी जिसे एक औपनिवेशिक साम्राज्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया था. मकसद सीधा था - अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों का एक ऐसा समूह बनाना जो ब्रिटिश शासन को चलाने में मदद कर सके. यानि सीधे शब्दों में बाबूगिरी.

इस शिक्षा प्रणाली में स्टैंडर्ड बनाये रखने, परीक्षा और रटने पर जोर दिया गया, जिससे क्लर्क और ब्यूरोक्रेट की कई पीढ़ियाँ तैयार हुईं जिन्होंने उपनिवेशों में कामकाज को सुचारू रूप से बनाये रखा. काल बदला और 2020 में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) लायी, जिसका मकसद उस मैकाले की उस प्रणाली को पूरी तरह से बदल कर भारत को 21वीं सदी की ज़रूरतों के लिए तैयार करना. अगर मैकाले का एजुकेशन मॉडल उस अंग्रेज साम्राज्य की सेवा करने के लिए था, तो नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिये युवा नेतृत्व को मजबूत करने की नींव बनी. यह अंतर बहुत अलग है. जहाँ औपनिवेशिक दौर का फ्रेमवर्क एक जैसा होने और 'रट्टू तोता' बनने पर फोकस करता था, वहीं एनईपी तार्किक सोच, रचनात्मकता, इनोवेशन, फ्लेक्सिबिलिटी और बहु-विषयक शिक्षा पर ज़ोर देती है. इसे 34 सालों में भारत की शिक्षा प्रणाली में पहला बड़ा बदलाव और आज़ाद भारत में किए गए सबसे बड़े सुधारों में से एक माना जाता है. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसके पीछे की सोच को परिभाषित करते हुए कहा था नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020, 21वीं सदी के भारत के युवाओं के लिए ज़रूरी शिक्षा और कौशल पर फोकस करती है. हमें अपने छात्रों को 21वीं सदी में उनका कौशल विकसित करने के लिये तैयार करना है. ये स्किल्स क्या होंगी? ये क्रिटिकल थिंकिंग, क्रिएटिविटी, कोलेबोरेशन, क्यूरियोसिटी और कम्युनिकेशन होंगी.

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 की खास बातें ...

- फ्लेक्सिबल, मल्टीडिसिप्लिनरी लर्निंग के साथ 34 सालों में सबसे बड़ा शैक्षणिक सुधार.
- 2014 और 2024 के बीच विश्वविद्यायल 723 से बढ़कर 1,213 हुए .
- उच्च शिक्षण संस्थान लगभग 59,000 हो गए हैं, जिससे पूरे भारत में इनकी पहुँच बढ़ रही है.
- 23 आईआईटी, 22 आईआईएम और 20 एम्स अब भारत के नॉलेज इकोसिस्टम को मज़बूत कर रहे हैं.
- फ्लेक्सिबल लर्निंग पाथवेज़ के लिए 4.6 करोड़ एकेडमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट्स आईडी जारी किए गए.
- 3.5 करोड़ नई सीटों के साथ 2035 तक 50% हायर एजुकेशन एनरोलमेंट का लक्ष्य.
- अनुसंधान नेशनल रिसर्च फ़ाउंडेशन (एएनआरएफ) के ज़रिए रिसर्च को बढ़ावा.

इस बदलाव का असर भारत की उच्च शिक्षा में तेज़ी से दिख रहा है. एक दशक पहले, लाखों छात्र, खासकर छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों से आने वाले छात्रों के लिए अच्छी गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक पहुंच बड़ी चुनौती बनी हुई थी. सीमित शिक्षण संस्थान, कम सीटें और भौगोलिक अंतर अक्सर मौकों और उम्मीदों को कम कर देते थे. आज, विस्तार के पैमाने को नज़रअंदाज़ करना मुश्किल है. भारत में विश्वविद्यालयों की संख्या 2014 की 723 से बढ़कर 2024 में 1,213 हो गई है, जबकि उच्च शिक्षण संस्थान 51,500 से बढ़कर लगभग 59,000 हो गए हैं. यह बढ़ोतरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने, नई सेंट्रल यूनिवर्सिटी और राष्ट्रीय महत्व के इंस्टीट्यूशन बनाने, और पीएम-उषा और राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान जैसे फ्लैगशिप प्रोग्राम की वजह से हुई है. यह बढ़ोतरी सिर्फ़ संख्यात्मक नहीं है.

आज भारत में 23 इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी(आईआईटी), 22 इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट (आईआईएम) और 20 ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (एम्स) हैं. अबू धाबी और जांजीबार में आईआईटी कैंपस खुलने से भारत की अपनी सीमाओं से बाहर बढ़ती शैक्षिक मौजूदगी और एक ग्लोबल नॉलेज पार्टनर के तौर पर उभरने का संकेत मिलता है. स्पष्ट है कि इस नेशनल एजुकेशनल पॉलिसी का उद्देश्य सख्त एकेडमिक स्ट्रक्चर से दूर जाना है. छात्रोंसे अब यह उम्मीद नहीं की जाती कि वे साइंस, कॉमर्स या ह्यूमैनिटीज के परम्परागत पाठ्यक्रमों तक ही सीमित रहें. एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के ज़रिए मल्टीपल एंट्री और एग्जिट का विकल्प, बहु-विषयक पाठ्यक्रम और क्रेडिट ट्रांसफर, छात्रों को उनकी पसंद और करियर के हिसाब से अपने भविष्य की राह चुनने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं.

एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स इस पॉलिसी के तहत सबसे बड़े सुधारों में से एक के तौर पर उभरा है. यह 2,600 से ज़्यादा इंस्टीट्यूशन को कवर करते हुए और 4.6 करोड़ से ज़्यादा छात्रों को आईडी जारी कर इंस्टीट्यूशन में एकेडमिक क्रेडिट जमा करने, स्टोर करने और ट्रांसफर करने की सुविधा देता है.

कांग्रेस में विलय टीएमसी की मजबूरी

चुनाव के नतीजों से पार्टियों का रवैया प्रभावित होता देखा गया है. जब बीजेपी का विजय रथ आगे बढ़ने लगा, तो विपक्षी पार्टियों के कितने ही नेता एनडीए में शामिल होने लगे. विपक्ष की यह फूट महाराष्ट्र की शिवसेना व राकांपा जैसी क्षेत्रीय पार्टियों में देखी गई. बंगाल में विधानसभा चुनाव के बाद टीएमसी के बागी सांसद भी अलग गुट बनाने की फिराक में जुट गए. अब संभावना बन चली है कि फूट को रोकने के लिए टीएमसी का कांग्रेस में विलय हो सकता है. राहुल गांधी और अभिषेक बनर्जी की डेढ़ घंटे की बैठक में डैमेज कंट्रोल की बात अवश्य हुई होगी. क्या बंगाल के चुनाव में कांग्रेस को जरा भी तरजीह न देने वाली ममता बनर्जी पुनः कांग्रेस में लौटकर उसकी उपाध्यक्ष बनना चाहेंगी या इंडिया गठबंधन की संयोजक बनकर बीजेपी को टक्कर देने की सोचेंगी? विधानसभा चुनाव में पराजय के बावजूद बंगाल के टीएमसी का वोट शेयर 40.80 प्रतिशत है. विधानसभा में उसके 80 सदस्य व लोकसभा में 29 सांसद हैं. इतने पर भी टीएमसी बंगाल और दिल्ली में अस्तित्व के संकट से जूझ रही है. चुनाव के पहले और बाद में अन्य पार्टियों के नेता पाला बदलकर बीजेपी के करीबी बनते देखे गए हैं. बंगाल में सुबेंदु अधिकारी व असम में हिमंत बिस्वा सरमा अन्य पार्टियों से निकलकर बीजेपी में आए हैं. तमिलनाडु, बिहार व यूपी में भी क्षेत्रीय पार्टियों का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है. इन पार्टियों के नेता पहले अपना हित देखते हैं. इस वजह से राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष का मजबूत गठबंधन नहीं बन पाता. राष्ट्रीय स्तर पर बीजेपी और कांग्रेस जैसी 2 बड़ी पार्टियां रह गई हैं. कांग्रेस को इसलिए नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, क्योंकि 4 राज्यों में उसकी सरकार है तथा लोकसभा में वह प्रमुख विपक्षी दल की हैसियत रखती है.

चुनाव में कांग्रेस को जरा भी तरजीह न देने वाली ममता बनर्जी पुनः कांग्रेस में लौटकर उसकी उपाध्यक्ष बनना चाहेंगी या इंडिया गठबंधन की संयोजक बनकर बीजेपी को टक्कर देने की सोचेंगी ?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

चढ़ने वाला है फुटबॉल फीवर दवा नहीं देगा कोई भी डॉक्टर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमने डॉक्टर से अपॉइंटमेंट ले लिया है. मरीजों की ज्यादा भीड़ बढ़ जाए, इसके पहले ही अपाइंटमेंट लेने में समझदारी है. आप भी ऐसा ही कीजिए.'

हमने कहा, 'आप और हम दोनों ही स्वस्थ और भले-चंगे हैं, फिर डॉक्टर के पास जाने की कौन-सी जरूरत है? हम लोगों की दिनचर्या बिल्कुल सही है. भूख लगने पर खाते हैं और नींद लगने पर सो जाते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अब दिनचर्या बुरी तरह बिगड़ने वाली है. हम दोनों को ही नहीं, लाखों भारतीयों को बहुत तेज फुटबॉल फीवर चढ़ने वाला है. दुनिया के 48 देशों का फीफा वर्ल्ड कप शुरू हो गया है, जो पूरे 39 दिन चलेगा.'

हमने कहा, 'बुखार या फीवर का फीफा वर्ल्ड कप से क्या संबंध है? फीफा को फूफा देखें या मामा, कौन-सा फर्क पड़ने वाला है! जब क्रिकेट के डे एंड नाइट मैच

देखने से आपको कुछ नहीं हुआ तो फुटबॉल देखने से क्या हो जाएगा!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, फुटबॉल का उन्माद सिर चढ़कर बोलता है. क्योंकि कुछ खिलाड़ी हेडर यानी सिर से गेंद को मारते हैं. आपने साइकिल चलाना छोड़ दिया लेकिन फुटबॉल में बड़ी कुशलता से साइकिल किक मारी जाती है. खिलाड़ी ऐसे-ऐसे मूव बनाते हैं, जिसे देखकर दिमाग चकरा जाता है. गोल मारने पर होने वाला दर्शकों का कर्णभेदी शोर आपके दिल की धड़कन बढ़ा सकता है. जब दिमाग पर फुटबॉल फीवर चढ़ जाता है, तो खेलप्रेमी बाप रे बाप की बजाय 'एमबाप्पे' चिल्लाने लगता है. राम नाम लेने की जगह रोनाल्डो का नाम जपने लगता है. गर्मी में मीठी लस्सी पीने की जगह मेस्सी-मेस्सी बोलने लगता है. अमेरिका के 16 शहरों में फीफा वर्ल्ड कप के मुकाबले होने वाले हैं. ट्रंप पहले ही सनकी हैं. फुटबॉल फीवर चढ़ा तो वह महासनकी हो जाएंगे.' हमने कहा, 'डॉक्टर भी मरीज की लाल आंखें देखकर कहेगा- तुम रात भर टीवी देखते हुए उल्लू की तरह जागते रहते हो. इसकी कोई दवा नहीं है. फीफा वर्ल्डकप समाप्त होते ही तुम फौरन अच्छे हो जाओगे. तब तक गोल होते देखो और ढोल बजाओ.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12287 - डॉ. सागर खादीवाला

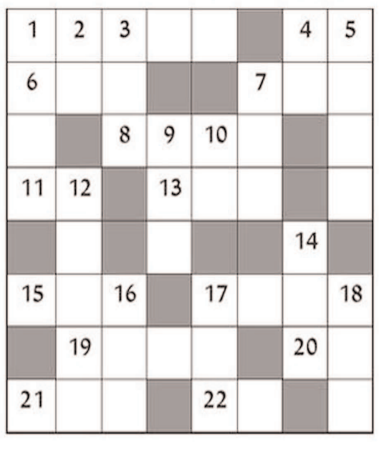

बाएं से दाएं
1. इकरारनामा, शर्तनामा (सं.) 4. इज्जत, पानी 6. दशा, स्थिति 7. नामालूम, जो ज्ञात न हो 8. बाधा, रोड़ा 11. गीला, शीतल 13. संपूर्ण 15. शापग्रस्त 17. मोमबत्ती रखने का पात्र 19. खाना बनाने की कला 20. मास, महीना 21. गले में पहनने का अर्धचंद्राकार आभूषण 22. स्याह, कोयले के रंग का

ऊपर से नीचे
1. जिस पर प्रहार हुआ हो 2. शरीर पर काले रंग का छोटा दाग 3. जानने योग्य, जो जाना जा सके, ज्ञेय (सं.) 4. आदेश, हुक्म 5. बातों से मिलने वाला रस 7.अग्नि (सं.) 9. वस्त्र, कपड़े, अंबर 10. दबदबा, आतंक 12. खून का प्यासा (सं.) पता 14. भगवान कृष्ण का बाल सखा 16. बिना चरखे के सूत कातने और लपेटने का एक आला 17. सलाई, छड़ (सं.) 18. नौ बूटियों वाला ताश का पत्ता

Solution 12286

अ	प	वा	द		सा	ध	ना
क	ता	र		उ	ज	ड़	ना
ब		दा	खि	ला		क	
र	ज	त		ह	य	ना	ल
	ला		सु	ना	म		ह
सा	व	धा	न		लो	हा	र
	त		य	म	क		दा
हि	न	हि	ना	ना		द्वा	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में वाहन का सुख मिलेगा, शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता के योग हैं, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, पारिवारिक समस्या में व्यस्तता रहेगी, अधिकारी के कोप का सामना करना होगा, मन व्यथित रहेगा, वर्ष के अन्त में धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, स्थिति सुधरेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, मन व्यथित रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख मिलेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का मन परेशान रह सकता है, अधिकारी से मतभेद बढ़ेंगे, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शिक्षा आदि में लाभ होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्ववान लगनशील, स्वस्थ्य एवं कोमल हृदय का होगा, मित्रों की संख्या अधिक होगी, इसकी यात्रा एवं मनोरंजन में विशेष रूचि रहेगी, शिक्षा में किसी खास विद्या को लेकर उन्नति करेगा, माता पिता का आदर करेगा.

मेष- नए काम की शुरूआत से मुश्किल आ सकती है, प्रियजनों के टकराव से बचें, राजकीय सम्मान मिलेगा, कानूनी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

वृषभ- बुजुर्गो के मार्गदर्शन से अच्छा लाभ होगा, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, उत्साह बना रहेगा, परोपकारी कार्यों में यश प्राप्त होगा.

मिथुन- झूठ बोलकर खुद मुश्किल में पड़ जायेंगे, अनावश्यक विवाद तनाव का कारण बनेगा, कामकाज में अरूचि बनी रहेगी, सोचे हुये कार्यों में बाधा आयेगी.

कर्क- अधिकारियों से मेलजोल लाभकारी रहेगा, जल्दबाजी में फैसले बदलना पड़ सकते हैं, व्यवसायिक मामलों में विस्तार होगा, दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी.

सिंह- अति आत्म विश्वास नुकसानदायी हो सकता है, न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी, शत्रुओं का पराभव होगा, अधिक परिश्रम करने पर अच्छी सफलता मिलेगी.

कन्या- मित्रों को दिया आश्वासन पूरा करना मुश्किल होगा, परीक्षा प्रतियोगिता में परिश्रम से सफलता मिलेगी, दूर दराज की यात्रा होगी.

तुला- सपना पूरा करना आपके लिये मुश्किल हो सकता है, सुख साधनों में वृद्धि होगी, निजी कार्यों में रूचि रहेगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह लाभदायक सिद्ध होगी.

वृश्चिक- कुछ लोग आपके विरूद्ध षडयंत्र रचने का प्रयास करेंगे, सावधानी रखकर कार्य करें, मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे, नये उपक्रमों का विकास होगा.

धनु- मन में अनहोनी की संभावना बनी रहेगी, जल्दबाजी में लिये फैसले बदलने पड़ेंगे, पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा.

मकर- परिवार की सुख सुविधा को लेकर चिन्ता रहेगी, दिनचर्या नियमित रहेगी, खाद्य सामग्री का संग्रह होगा, मित्रों का सहयोग रहेगा.

कुम्भ- बिखरे कामों को समेटने में सफलता मिलेगी, मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे, नये लोगों से मैत्री संबंध प्रगाढ़ होंगे, संयम से काम लें.

मीन- फिजूल की बातों से आप सशंकित रहेंगे, उच्च अध्ययन के अवसर मिलेंगे, सामाजिक संबंधों में सुधार होगा, साहसपूर्ण कार्य बनेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

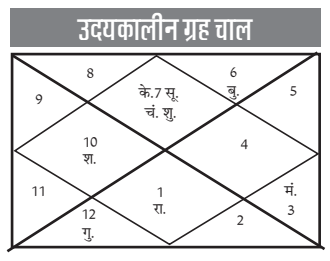

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी शनिवासरे दिन 1/37, कृतिका नक्षत्रे रात 12/5, सुकर्मा योगे दिन 4/18, वणिज करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार मेष दिन 7/13 से वृषभ, पर्व-मासशिवरात्रि व्रत, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी को कृतिका नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, में घटबढ़ के बाद नरमी होगी, गेहूँ, जौ, चना, जूट, पाट, बारदाना, देशी घी, तेल, सरसों, में मंदी की चाल चलेगी. वायदा विचार आज 10 बजकर 30 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 5676 है.

SUDOKU 7419

9		2		4	1	7		
1						6		
5	7	3	2				4	
				9	4	8		
4		7				9		6
		5	8	3				
	3				6	5	9	1
		6						7
		9	1	8		2		4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7418

5	4	9	1	8	3	2	6	7
1	2	6	4	9	7	3	5	8
3	8	7	5	2	6	1	4	9
8	7	1	3	4	2	6	9	5
9	5	3	6	1	8	7	2	4
2	6	4	7	5	9	8	1	3
4	3	5	2	7	1	9	8	6
6	9	2	8	3	4	5	7	1
7	1	8	9	6	5	4	3	2